उषा प्रियंवदा के उपन्यासों की प्रासंगिकता

श्री जाधवर धनराज संदिपान
शोधार्थी
हिंदी भाषा एवं साहित्य अनुसन्धान केंद्र
महात्मा बसवेश्वर महाविद्यालय लातूर ४१३५७२ महाराष्ट्र

साहित्य में सामाजिक चेतना और रचनाकार का निजी व्यक्तित्व, दोनों समन्वित रहते हैं। इनमें किस तत्व की प्रधानता है, इसका निश्चय करना कठिन होता है। साहित्यकार की दृष्टि समाज के समग्र शरीर पर रहती है। हिन्दी कथा साहित्य में प्रेमचन्द युग तक आते–आते नारी जीवन से संबंन्धित समस्याएँ अपनी पूर्णता के साथ चित्रित करना प्रारंभ हो गया था। स्वयं प्रेमचन्द ने नारी जीवन की समस्याओं को पूर्ण सहानुभूति, गंभीरता और सूक्ष्मता से पकडा था तथा अपने साहित्य में कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की। वे पहले कथाकार थे जिन्होंने नारी व्यक्तित्व एवं जीवन को पूर्ण संवेदना के साथ वाणी प्रदान की। इरा काल के कथाकारों का सुझाव मध्यवर्गीय नारी की समस्या के प्रति विशेष रहा। निम्न और उच्च वर्ग की नारी पर भी इनकी दृष्टि गयी। इस युग के कथा–साहित्य में नारी जीवन के विभिन्न समस्याओं के निराकरण की आवश्यकता को सशक्त रुप से रेखांकित किया गया है। इसी समय कई महिला कथा लेखिकाएँ भी उभर कर आयी जिन्होंने सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक आदि समस्याओं से जुडकर कहानियाँ तथा उपन्यास लिखीं।

आज की नारी अनेक समस्याओं के जाल में फंसी है। समाज में आज नारी को नयी सजा प्रदान की है लेकिन समाज के कर्कश पाबंदियाँ, संकोच ओर गृहस्थी के बोझ के कारण पहले स्त्रीयों को सुजन के क्षेत्र में आने की सुविधायें नहीं मिली थी। किन्तु लेखिकाओं को सृजनात्मक अभिव्यक्ति की सुविधायें मिली है। उनकी ओर से कुछ सशक्त उपन्यास हिन्दी को मिली हैं। महिला उपन्यासकारों ने अपने औपन्यासिक कृतियों के द्वारा सामाजिक दायित्वों का निर्वाह किया। उन्होंने एक ओर से जहाँ सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा, विशुद्‌ध रुप से मानवीय धरातल पर की है वहीं दूसरी ओर पूर्वयुगीन जर्जर रुढिगत

मूल्यों का खुलेरुप में बहिष्कार भी किया है। 'उपन्यास स्वरुप और संवेदना' में राजेन्द्र यादव ने इस प्रकार बताया है ''यह भी कहा जा सकता है कि सजीव व्यक्तित्ववाले नारी–पुरुष संबन्धों के वास्तविक तनाव–लगाव और उन्हें निर्धारित करनेवाले दबाव पहली बार सामने आ रहे हैं, इस दिशा में कृष्णासोबती, उषा प्रियंवदा, मन्नु भंडारी, ममता मृदुला, निरुपमती, मालती जोशी के नाम लिए जा सकते है।'' साहित्य का उद्देश्य पाठकों को कोरा आनन्द प्रदान करना होता है और यह तभी संभव है जब वैयक्तिक कुंठाओं और अभावों का ही चित्र न होकर संपूर्ण समाज और जन–समुदाय की कथाओं अभावों और संघर्ष की मुक्ति पथ तथा प्रगति पथ की ओर ले जाने की राह सुझायें, महिला उपन्यासकारों ने इस ओर ध्यान दिया है।

नारी लेखनी ने नारी के विविध रुप दिखया है। संयुक्त परिवार, दांपत्य जीवन तथा टूटन, प्रेम–विवाह, अंर्तजातीय तथा बेमेल विवाह की विसंगतियॉं, तलाक, तलाक–शुदा नारी की सामाजिक स्थिति, नारी और नैतिकता, अकेलापन आदि समस्याओं से आधुनिक नारी को जूझना पडती है। सेक्स भी अब नारी के लिए कुंठा की अभिव्यक्ति मात्र न रहकर जीवन की आवश्यकता माना जाने लगा। महिला लेखिकाओं ने इन समस्याओं के अनेक बदलते दृष्टिकोणों ने अपनी कृतियों के द्वारा शब्द उठाया। इन तीनों लेखिकाओं की रचनाओं का लक्ष्य भी इन समस्या से जूझानेवाली नारी का चित्रण करना है। डॉ. आस्सु ने लिखा है– ''महिला लेखन ने पृथक विश्लेषण पर आज कई लेखिकाओं ने असंतोष प्रकट किया है। कृष्णसोबती की राय है कि जहॉं तक शरीर संरचक का प्रश्न है महिला व पुरुष हर हाल में भिन्न रहेंगे। किन्तु योग्यता और रचना धार्मिकता के धरातल परखें तो मैं नही समझती कि स्त्री किसी तरह पुरुषों से कम पडती हैं। महिला लेखन और पुरुष लेखन महज एक नारेबाजी है। मृदुला गर्ग ने भी इस मुद्दे पर अपनी राय यों प्रकट की है मैं नहीं मानती कि महिला लेखन और पुरुष लेखन में कोई मूलभूत अंतर है। जहॉं तक मेरा अपना लेखनीय अनुभव है, स्त्री होने के कारण मुझे न अतिरिक्त संघर्ष करना पडा और न अतिरिक्त शोषण या पक्षपात का सामना'' इन लेखिकाओं के उपन्यासों में घर, कार्यालय, और संस्थाओं की महिलाओं के अनुभवों को वाणी मिली है। भोगे हए यथार्थ का चित्रण इनके उपन्यासों का केन्द्रीय तत्व है। इन लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं के माध्यम से आजकल नारी को सामना करनेवाली अनेक समस्याओं को हमारे सामने प्रस्तुत किया। जैसे विवाह संबन्धी समस्या, संयुक्त परिवार या अणुकुटुम्ब में फंसनेवाली

नारी की समस्या, कामकाजी युवतियों की समस्या, बुढापे की समस्या, वेश्याओं की समस्या, युवतियों की बेरोज़गारी की समस्या आदि इस के लिए कुछ उदाहरण है।

संदर्भ :–

१. अभी दिल्ली दूर है, राजेन्द्रयाादव, वाणी प्रकाशन, दिल्ली – प्रथम संस्मरण १९९५.
२. अज्ञेय और उनका उपन्यास संसार, डॉ.ब्रम्हदेव मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण – १९९२.
३. उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में व्यक्त नारी चेतना – शारदा बी.पटेल – गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, संस्करण २००८.
४. कथाकार उषा प्रियंवदा – डॉ.सुभाष पवार – विद्या प्रकाशन, कानपूर–२२, प्रथम संस्करण २०१०.
५. आधुनिकता के संदर्भ में प्रमुख, महाकाव्यों में नायिका, डॉ.कमलगुप्ता, दीपक पब्लिशर्ज़, जालन्धर, प्रथम संस्करण–१९८४